हिन्दी कथा साहित्य में एलजीबीटीक्यू जन (LGBTQ) : विविध आयाम

HINDI KATHA SAHITYA MEIN LGBTQ JAN: VIVIDH AAYAAM

Thesis Submitted for the partial fulfilment of the requirements for the Degree Doctor of Philosophy in Arts

By
MADHUMITA OJHA

Under the supervision of
DR. VED RAMAN PANDEY

DEPARTMENT OF HINDI
FACULTY OF HUMANITIES AND SOCIAL SCIENCES
PRESIDENCY UNIVERSITY
KOLKATA, INDIA
JUNE : 2023

हिन्दी कथा साहित्य में एलजीबीटीक्यू जन (LGBTQ) : विविध आयाम

HINDI KATHA SAHITYA MEIN LGBTQ JAN: VIVIDH AAYAAM

मधुमिता ओझा / MADHUMITA OJHA
Registration No. R-17RS01210119
Date of Registration: 6th December 2018
Department of Hindi

मधुमिता ओझा
शोधार्थी

समर्पण

अपनी बेटी किट्टु को ...

घोषणा

मैं मधुमिता ओझा यह घोषणा करती हूँ कि पी-एच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबंध **"हिन्दी कथा साहित्य में एलजीबीटीक्यू जन (LGBTQ) : विविध आयाम"** मौलिक है। इस शोध कार्य में मुझे निर्देशक के रूप में डॉ. वेद रमण पाण्डेय, एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, प्रेसीडेंसी विश्वविद्यालय, कोलकाता का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है।

इस शोध-प्रबंध में समाहित सभी जानकारियां शैक्षिक नियमों और नैतिक आचरणों के अनुरूप प्राप्त और प्रस्तुत की गयी हैं।

मैं यह भी घोषणा करती हूँ कि लागू नियमों और आचरणों के अनुसार मैंने उन सभी सामग्रियों और परिणामों को सम्यक रूप से उद्धृत और संदर्भित किया है जो इस शोध-प्रबंध में मौलिक नहीं है।

मैं यह भी घोषणा करती हूँ कि यह शोध-प्रबंध अंशतः या पूर्ण रूप से किसी अन्य विश्वविद्यालय या संस्थान में इससे पहले प्रस्तुत नहीं किया गया है।

Declaration

I hereby declare that thesis contains original research work carried out by me under the guidance of Dr. Ved Raman Pandey, Associate Professor, Department of Hindi, Presidency University, Kolkata, India as part of the PhD programme.

All information in this document have been obtained and presented in accordance with academic rules and ethical conduct.

I also declare that, as required by these rules and conduct, I have fully cited and reference all materials and result that are not original to this work.

I also declare that, this work has not been submitted for any degree either in part or in full to any other institute or University before.

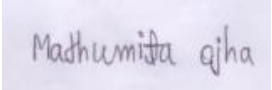

MADHUMITA OJHA
Department of Hindi
Registration Number: R-17RS01210119
Presidency University, Kolkata

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि मधुमिता ओझा, शोधार्थी, हिंदी विभाग, प्रेसीडेंसी विश्वविद्यालय, कोलकाता ने अपना शोध-प्रबंध **"हिन्दी कथा साहित्य में एलजीबीटीक्यू जन (LGBTQ) : विविध आयाम"** मेरे पर्यवेक्षण एवं निर्देशन में इस विश्वविद्यालय की पी-एच. डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत किया है।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध शोधार्थी के मौलिक एवं स्वतंत्र कार्य का परिणाम है। मेरे संज्ञान में इस अनुसंधान-सामग्री का उपयोग आंशिक या पूर्णरूप से अन्यत्र शोध की उपाधि हेतु नहीं किया गया है।

Certificate

This is to certify that the thesis entitled **"हिन्दी कथा साहित्य में एलजीबीटीक्यू जन (LGBTQ): विविध आयाम"** "**HINDI KATHA SAHITYA MEIN LGBTQ JAN: VIVIDH AAYAAM"** submitted by Smt. MADHUMITA OJHA, who got her name registered for PhD programme under my supervision (Registration Number R-17RS01210119, 6th December, 2018) and that neither her thesis nor any part of the thesis has been submitted for any degree/diploma or any other academic award anywhere before.

Signature of the Supervisor(s) with date and official stamp

.....

Research Supervisor / शोध निर्देशक

Dr. Ved Raman Pandey/ डॉ. वेद रमण पाण्डेय

Associate Professor (Hindi Department) / एसोसिएट प्रोफेसर (हिंदी विभाग)

Presidency University, Kolkata / प्रेसीडेंसी विश्वविद्यालय, कोलकाता

भूमिका

भूमिका

एलजीबीटीक्यू विमर्श उत्तर-संरचनावादी सिद्धांत का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है जिसका उद्भव 1990 के दशक में क्वीयर अध्ययन तथा महिला अध्ययन के क्षेत्र में होता हैं। विषमलैंगिक पुरुष वर्चस्व वाली सामाजिक संरचना के बावजूद समलैंगिक विमर्श की चर्चा दबे जुबानों में होती रही जिसका व्यापक स्वरूप बाद में क्वीयर (एलजीबीटीक्यू) विमर्श के रूप में उभरकर सामने आया। एलजीबीटीक्यू विमर्श समाज के एक हिस्से के लिए समान अधिकार मांगने तक सीमित नहीं है बल्कि यह बदलाव की मांग करता है। यह उन सभी सामाजिक व्यवस्थाओं और विचारधाराओं पर सवाल उठाता है जो अन्याय की स्थिति बनाये रखते है। पूरी संस्कृति और समाज में दो ही लिंगों के लिए स्थान है। भाषा में भी दो ही लिंगों के लिए जगह है। समाज इस दोहरे लिंग की विचारधारा से जकड़ा हुआ है। जेंडर पहचान तथा यौनिकता के अन्य प्रकारों का समाज में कोई स्थान नहीं है। जिनके भावनाओं के लिए शब्दकोश में भी कोई जगह नहीं है। जेंडर पहचान परंपरा और संस्कृति का उत्स है। एक समय तक यौनिकता को जैविक माना गया किन्तु बाद में इस पर हुए शोध तथा वाद-विवाद से स्थापित हुआ कि यौनिकता भी एक निर्मिति है, इसपर भी संस्कृति का प्रभाव है।

एलजीबीटीक्यूजन का आशय लेस्बियन, गे, बाईसेक्शुअल, ट्रांसजेंडर तथा क्वीयर वर्ग से है। समाज के जेंडरगत व्यवस्था ने एलजीबीटीक्यूजन को पूर्णतः हाशियाकृत बनाये रखा। एलजीबीटीक्यू विमर्श अर्थात् क्वीयर विमर्श ने समाज में व्याप्त बाइनरी जेंडर व्यवस्था को प्रशनांकित किया। यह विमर्श उन तमाम अनछुए पहलुओं से टकराता है जो व्यक्ति को किसी निश्चित जेंडर के अनुकूल व्यवहार करने के लिए बाध्य करता है। एलजीबीटीक्यू विमर्श मुक्ति की दृष्टि की बात करता है, यह जेंडर से जुड़े स्टीरियोटाइप को तोड़ता है, यह पुरुष के पुरुषत्व को तोड़ता है। अपनत्व और साझेदारी की वकालत करता है। यह सर्वसमावेशी है। यह दैहिक हिंसा खासतौर पर वैवाहिक संबंध में मौजूद हिंसा से भी मुक्ति

की बात करता है। हिंसात्मक भाव से मुक्ति ही स्त्री को स्त्री के तरफ मोड़ती है ऐसा नहीं हैं, असल में समलैंगिकता यौनिक आकर्षण है जो बेहद सामान्य और सहज है। यह आकर्षण यौनिक अभिविन्यास से जुड़ा है। दरअसल हिन्दी साहित्य में इस पूरे परिप्रेक्ष्य को आपस में ऐसे घुला-मिला दिया गया है जैसे मानो हिंसात्मक परिस्थितियों से मुक्ति की कामना ही समलैंगिकता की उपज हो। एलजीबीटीक्यू विमर्श देह में रचे-बसे विभिन्न भावों जैसे इच्छा, कामना, आकांक्षा, यौनिकता पर एक साथ बात करता है। किन्तु हिन्दी साहित्य में जब यौनिकता पर बात की गई तो ये वो चोर गलियां थी जिनसे बचके निकला गया। प्रस्तुत शोध-प्रबंध इस पूरे परिप्रेक्ष्य का विश्लेषण करते हुए हिन्दी कथा साहित्य में एलजीबीटीक्यूजन की उपस्थिति को चिह्नित करता है।

उक्त शोध को कुल सात अध्यायों में विभाजित किया गया है। पहले अध्याय 'जेंडर और यौनिकता' में 'जेंडर और यौनिकता' की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए इनके आपसी संबंधों एवं फर्क को समझने-समझाने का प्रयास किया गया है। इस संदर्भ में विभिन्न विद्वानों के मतों का उल्लेख करते हुए उसके विश्लेषण का प्रयास किया गया है। जेंडर और यौनिकता पर पड़ने वाले समाज एवं संस्कृति के प्रभाव की चर्चा की गयी है। जेंडर और यौनिकता से जुड़े भ्रामक मनः स्थितियों को प्रश्नित किया गया है। यह समझाने की कोशिश की गयी है कि कैसे जेंडर को प्रभावित करने वाले कारक उसकी परिभाषा गढ़ते है। जेंडर और यौनिकता के संदर्भ में पितृसत्ता, संबंधों की सत्ता, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विकासक्रम की चर्चा की गयी है। दूसरा अध्याय 'एलजीबीटीक्यूजन : विविध आयाम' है। इस अध्याय में 'एलजीबीटीक्यूजन' पदबंध को विश्लेषित करते हुए स्त्री और पुरुष खेमे के अतिरिक्त अन्य पहचानों पर पड़ने वाले पितृसत्तात्मक व्यवस्था के प्रभाव का विवेचन-विश्लेषण किया गया है। साधारण जनमानस एलजीबीटीक्यूजन को जिस रूप में जानते है वह लेस्बियन, गे तथा ट्रांसजेंडर हैं। लोग किन्नर और समलैंगिक से अवगत है। किन्तु बहुत से लोग इसके भितर की विभिन्न इकाइयों से परिचित नहीं है मसलन समलैंगिक, किन्नर और ट्रांसजेंडर आदि पदबंध कई अर्थों और अवधारणाओं को समेटे हुए है, इसे स्पष्टता से रेखांकित करने का प्रयास किया गया है।

तीसरे अध्याय 'एलजीबीटीक्यू जन (LGBTQ) : अस्मिता और अधिकार की लड़ाई' में एलजीबीटीक्यू विमर्श के उद्भव, विकास-क्रम तथा उससे जुड़े आंदोलनों को बताने का प्रयास किया गया है। पश्चिम सहित भारत में एलजीबीटीक्यूजन से संबंधित आंदोलनों एवं कानून की चर्चा की गयी हैं। प्रस्तुत अध्याय में विस्तार से चर्चा की गयी है कि कैसे धारा 377 तथा 375 (यौनिक अत्याचार) को आपस में घुला-मिला दिया गया है जिससे इस समुदाय को विभिन्न प्रकार के शोषण का सामना करना पड़ता है। समूहों, संगठनों तथा समितियों के बयान को भी शामिल किया गया है जिन्होंने धारा 377 के पक्ष तथा विपक्ष में अपना मत दिया। एलजीबीटीक्यूजन के विकास में पत्र-पत्रिकाओं, सांस्कृतिक संगठनों, अकादमिक चर्चाओं तथा विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े लोगों के आन्दोलनात्मक भूमिका की चर्चा की गयी है। चौथे अध्याय 'एलजीबीटीक्यू जन (LGBTQ) : इतिहास और वर्तमान' में भारतीय पौराणिक एवं प्राचीन कथाओं में एलजीबीटीक्यूजन के संदर्भ के दृष्टिकोण से जेंडर और यौनिकता से जुड़ी विविधता को रेखांकित करने का प्रयास किया गया है। महर्षि वाल्मीकि कृत 'रामायण', वेदव्यास कृत 'महाभारत', वात्स्यायन कृत 'कामसूत्र', वराह मिहिर कृत 'वृहत जातक' में कहीं किन्नरों का तो कहीं किन्नरों सहित समलैंगिकता का चित्रण हुआ है। मध्य भारत में बने खजूराहों, पूर्व में पूरी तथा दक्षिण में तंजुवर जैसे मंदिरों पर बनी नक्काशी एवं चित्रों में महिला-महिला के बीच तथा पुरुष-पुरुष के बीच स्वच्छंद प्रणय संबंधी कलाकृतियों को देखा जा सकता है। इस अध्याय में सिनेमा में अभिव्यक्त क्वीयरजन के स्वर की चर्चा को भी शामिल किया गया है।

पाँचवे अध्याय 'हिन्दी कथा साहित्य में एलजीबीटीक्यू जन (LGBTQ)' में हिन्दी कथा साहित्य में एलजीबीटीक्यूजन की मौजूदगी तथा उनकी सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक स्थिति का विश्लेषण किया गया है। जेंडर और यौनिकता से जुड़े सभी सवालों को विभिन्न रचनाओं के आलोक में तार्किक ढंग से विश्लेषित किया गया है। एलजीबीटीक्यू विमर्श का मानना है कि यौनिकता का कोई निश्चित मापदंड नहीं है क्योंकि ऐसे विभिन्न लोग है जो स्वयं को एलजीबीटी की घोषित परिभाषा के दायरे में नहीं रखना चाहते किन्तु स्वतंत्रतापूर्वक अपने समान लिंग के प्रति आत्मीय संबंधों में बने रहना

चाहते हैं। जिन्हें क्वीयर कहा जा सकता है। जिनकी झलक उपन्यास तथा कहानियों में देखी जा सकती है। कुछ रचनाओं में पात्रों को उनके हाव-भाव तथा प्रवृतियों के आधार पर एलजीबीटीक्यूजन की श्रेणी में रखा गया है, कुछ रचनाओं में एलजीबीटीक्यू पात्र प्रत्यक्ष रूप में दिखाई देते हैं, कुछ में एलजीबीटीक्यूजन का उल्लेख मात्र है, कुछ के अनुसार समलैंगिकता का उद्भव प्रतिकूल परिस्थितियों, उपेक्षा तथा विवशता के कारण होता है, कुछ में पात्रों को आक्रामक रूप में दिखाया गया है, कुछ रचनाएं पिडोफिलिया पर आधारित है, कुछ में एलजीबीटीक्यू पात्र प्रत्यक्ष दिखाई नहीं देते परंतु भिन्न यौनिकता के कारण उनके वैवाहिक संबंधों में विच्छेद दिखाई देता है, कुछ रचनाएं किन्नर जीवन तथा उनके पीड़ा यातना को केंद्र में लाती हैं जिसके बाद हिन्दी में किन्नर विमर्श मुद्दे पर खुलकर बहस हुआ, तो कुछ रचनाकारों ने ट्रांसजेंडर जीवन से जुड़े सामाजिक अनुभवों के गहरे सरोकारों को व्यक्त किया है।

छठा अध्याय 'हिन्दी कथेतर साहित्य में एलजीबीटीक्यू जन (LGBTQ)' है। उक्त अध्याय में हिन्दी कथेतर साहित्य में समलैंगिक भावना के प्रेम संबंध को एलजीबीटीक्यूजन के संदर्भ में विश्लेषित किया गया है। सामाजिक कार्यकर्ता माया शर्मा और शांति द्वारा लिखित 'भँवरी की जीवनी', मैत्रेयी पुष्पा का औपन्यासिक आत्मकथा 'कस्तूरी कुंडल बसै', माया शर्मा की जीवनी 'लविंग वूमेन', प्रभाकर श्रोत्रिय की नाट्य रचना 'इला', लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी की आत्मकथा 'मैं हिजड़ा मैं लक्ष्मी', मानोबी बंद्योपाध्याय की आत्मकथा 'पुरुष तन में फंसा मेरा नारी मन', सुधीर चंद्र द्वारा लिखित सुप्रसिद्ध चित्रकार भूपेन खख्खर की जीवनी 'भूपेन खख्खर : एक अंतरंग संस्मरण' में एलजीबीटीक्यू जन की मौजूदगी का विवेचन एवं विश्लेषण किया गया है। सांतवे अध्याय 'भारतीय समाज में एलजीबीटीक्यू जन (LGBTQ) : समस्याएं और संभावनाएं' में एलजीबीटीक्यू जन की समस्याओं तथा संभावनाओं को समझने हेतु स्वयं को घोषित तौर पर एल, जी, बी, टी मानने वाले व्यक्ति विशेष तथा सामाजिक कार्यकर्ताओं तथा विभिन्न रचनाकारों के साक्षात्कार को शामिल किया गया है। एलजीबीटीक्यू जन की अवस्थिति, समस्या एवं आवश्यकता की भी चर्चा की गयी है।

इस शोध में हिन्दी कथा साहित्य में एलजीबीटीक्यूजन से संबंधित 28 उपन्यास, 15 कहानियों, 1 कहानी संकलन, हिन्दी कथेतर साहित्य में 7 रचनाओं तथा 15 फिल्मों को केंद्र में रखा गया है। कुछ रचनाओं में प्रवृतियाँ पाई गई, कुछ में मूल रूप से चरित्र स्पष्ट रूप में तो कुछ बिल्कुल अस्पष्ट स्वभाव में उभरकर सामने आया है। इन सभी आधारों पर उपन्यास और कहानियों का चयन किया गया है। विश्लेषण के लिए अंतर्वस्तु विश्लेषण का प्रयोग किया गया है। शोध कार्य के दौरान पूरी कोशिश की गई है कि एलजीबीटीक्यूजन की मूल प्रवृत्ति को पुस्तकों अर्थात द्वितीय स्त्रोत के अतिरिक्त प्राथमिक स्त्रोत से भी ढूँढी जाए। एलजीबीटीक्यूजन को लेकर पुस्तकों में भी बहुत स्पष्टता उपलब्ध नहीं था। इसीलिए यह आवश्यक था कि सीधे ऐसे लोगों से मुखातिब होकर उनके प्रवृत्ति को समझा जाए। अब बहुत लोग इस पर चर्चा करते हैं लेकिन तब भी इस विषय के बहुत से पक्ष अब भी अनचिन्हे हैं, छिपे हैं। इस स्थिति को स्पष्ट करने के उद्देश्य से एलजीबीटीक्यूजन के बीच जाना आवश्यक था। उन्हें लिखित रूप में चिह्नित करना मुश्किल था। उनके मूल प्रवृत्ति के बारे में ऐसे लोगों से भी जानने का अवसर मिला जो सामाजिक रूप से चिह्नित नहीं हैं। इन सब चीजों को समझने के पश्चात उनसे बातचीत तथा उपलब्ध पुस्तकों के मुकम्मल अध्ययन के सहयोग से एलजीबीटीक्यूजन के बारे में एक स्पष्ट विचार बनाने के पश्चात हिन्दी कथा साहित्य के उपन्यासों और कहानियों में उपलब्ध चरित्रों का विश्लेषण उनकी प्रवृत्तियों का विश्लेषण करते हुए यह जानने की कोशिश की गई कि लेखकों द्वारा चित्रित संबंधित चरित्र या स्वभाव कितना उस प्रवृत्ति से मेल खाता है, कितना करीब है। हिन्दी कथा साहित्य की परंपरा में 1920 से 2020 तक की अवधि में एलजीबीटीक्यूजन से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से संबंधित या केंद्रित रचनाओं को उक्त शोध के आधार ग्रंथ के रूप में लिया गया है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध आदरणीय गुरु प्रो. (डॉ.) वेद रमण पाण्डेय जी के अतुल्य मार्गदर्शन का ही प्रतिफल है। शोधकार्य के सिलसिले में जब कभी उलझी हूँ उनके कुशल निर्देशन ने मुझे सहयोग दिया तथा प्रोत्साहित किया। हिन्दी में एलजीबीटीक्यू विमर्श जैसे नये विषय पर काम करने की प्रेरणा तथा उनके साथ विचार-विमर्श के बिना यह संभव नहीं हो पाता। अतः हृदय से उन्हें आभार प्रकट करती हूँ।

प्रेसीडेंसी विश्वविद्यालय, हिन्दी विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. तनुजा मजूमदार जी का विशेष आभार जिन्होंने दो वर्षों तक सह-निर्देशक के रूप में स्नेहहिल सहयोग दिया। साथ ही प्रेसीडेंसी विश्वविद्यालय, हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डॉ. अनिंद्य गंगोपाध्याय, डॉ. ऋषि भूषण चौबे, डॉ. मुन्नी गुप्ता, इतिहास विभाग की डॉ. मृदु राय, डॉ. नवरस जाट अफरीदी, बांग्ला विभाग के डॉ. शाऊन नंदी, तथा प्रो. अनुपमा मोहन (आई. आई. टी. जोधपुर) को हृदय से आभार प्रकट करती हूँ। प्रो. राजश्री शुक्ला (कलकत्ता विश्वविद्यालय, हिन्दी विभाग) तथा प्रो. रूपा गुप्ता (बर्धवान विश्वविद्यालय, हिन्दी विभाग) के प्रति कृतज्ञता अर्पित करती हूँ जिनसे निरंतर शोध संबंधी सुझाव मिलते रहें।

प्रो. (डॉ.) सत्यप्रकाश तिवारी (शिबपुर दीनबंधु कॉलेज), प्रो. (डॉ.) जय कौशल (असम विश्वविद्यालय), डॉ. अजीत दास (चितरंजन कॉलेज), लेखिका अलका सिन्हा, प्रो. निलाद्रि आर. चटर्जी (कल्याणी विश्वविद्यालय) जी का आशीर्वाद तथा पथ-प्रदर्शन सदैव मेरा आत्मबल बढ़ाता रहा। सामाजिक कार्यकर्ता माया शर्मा जी के प्रति मैं विशेष रूप से कृतज्ञ हूँ जिन्होंने कई महत्वपूर्ण गुत्थियों को सुलझाने में मेरी सहायता की है। जिनकी आत्मीयता तथा प्रेरणा से मुझे शोध कार्य में सहायता मिली। ट्रांसजेंडर जज जोयीता मंडल, लेखक सूरज प्रकाश, लेखक पंकज सुबीर, लेखिका आकांक्षा पारे काशिव, जगजीत सिंह सलूजा, तथा ट्रांसजेन्डर Sanju Lootooa के प्रति भी आभार व्यक्त करती हूँ। डॉ. अभिषेक त्रिपाठी, सायक मन्ना तथा साथी डॉ. कार्तिक राय और नेहा चतुर्वेदी सहित सभी शोधार्थी मित्रों के साथ होने वाले शोध संबंधी संवाद ने निरंतर सक्रिय बनाएं रखा। मेरी अबोध बच्ची (किट्टु 8 माह) की ऊर्जा भर देने वाली मुस्कान और जीवनसाथी रोहित जी के साथ एवं सहयोग ने मुझे मेरे लक्ष्य तक पहुँचने में पूरी सहायता प्रदान की। इन सबके साथ अपने माता-पिता सहित परिवार के सभी सदस्यों के प्रति कृतज्ञ हूँ। जिनका स्नेह तथा आशीर्वाद बना रहा।

'Sappho for Equality' संगठन की विशेष आभारी हूँ जिन्होंने पुस्तकें, शोध सामग्री तथा आवश्यक जानकारी सस्नेह उपलब्ध करवाई। केन्द्रीय पुस्तकालय (प्रेसीडेंसी विश्वविद्यालय, कोलकाता), राष्ट्रीय पुस्तकालय (कोलकाता), भारतीय भाषा परिषद (कोलकाता), साहित्य अकादमी

पुस्तकालय (दिल्ली), केन्द्रीय पुस्तकालय (जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली) तथा प्रेसीडेंसी विश्वविद्यालय (कोलकाता) के सभी गैर-शैक्षणिक कर्मचारियों के प्रति भी आभार जिन्होंने प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहयोग दिया।

List of Published research papers and Patents out of the research work

शोध आलेख (प्रकाशित) / Published Research Articles			
क्रम	**लेख का शीर्षक / Title**	**पत्रिका**	**अंक / पृष्ठ / लिंक**
1.	किन्नर केंद्रित उपन्यासों में संवेदना के विविध आयाम	**शोध दिशा** ISSN 0975-735X UGC-CARE LISTED	अंक 56 अक्टूबर -दिसम्बर 2021 पृ. 322 -326
2.	भारतीय समाज और किन्नर जीवन	**Akshara Multidisciplinary Research Journal** ISSN NO. 2582 - 5429 PEER-REVIEWED & REFEREED INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL	नवंबर 2021 वॉल्यूम 11, अंक-3 पृ. 86-88
3.	किन्नर कथा: नये आयाम नये दृष्टिकोण	**अनुसंधान त्रैमासिक पत्रिका** ISSN -0975-850X	अंक जुलाई-दिसम्बर 2018 पृ. 80-81

शोध संबंधी सेमिनार / Attending subject based seminars			
क्रम	**लेख का शीर्षक / Title**	**संस्थान-संस्था / Institution**	**तिथि-वर्ष / Date-year**
1.	किन्नर विमर्श के विविध आयाम	हिन्दी विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया केन्द्रीय विश्वविद्यालय एवं साहित्य संचय, नई दिल्ली	25 अप्रैल 2019 (एक दिवसीय)
2.	किन्नर विमर्श	खालसा कॉलेज फॉर वूमैन, लुधियाना एवं केन्द्रीय हिन्दी संस्थान,आगरा	5 नवंबर 2019 (एक दिवसीय)

विषय से अलग शोध आलेख (प्रकाशित) / Apart from subject			
क्रम	**लेख का शीर्षक / Title**	**पत्रिका**	**अंक / पृष्ठ**
1.	यथार्थ के आईने में स्त्री ('एक बटा दो' उपन्यास के संदर्भ में)	सेतु ISSN 2574-1359	अक्तूबर 2020 वर्ष-5 अंक-5
2.	शोध की सामाजिक भूमिका	Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal ISSN 2581-6306	वॉल्यूम-3 इस्यू -1 2020 पृ . 152-154
3.	नेलकटर: बचपन की मासूम स्मृतियों पर आधारित कहानी	जनकृति ISSN 2454-2725	अक्टूबर - दिसंबर 2017 अंक -30-32